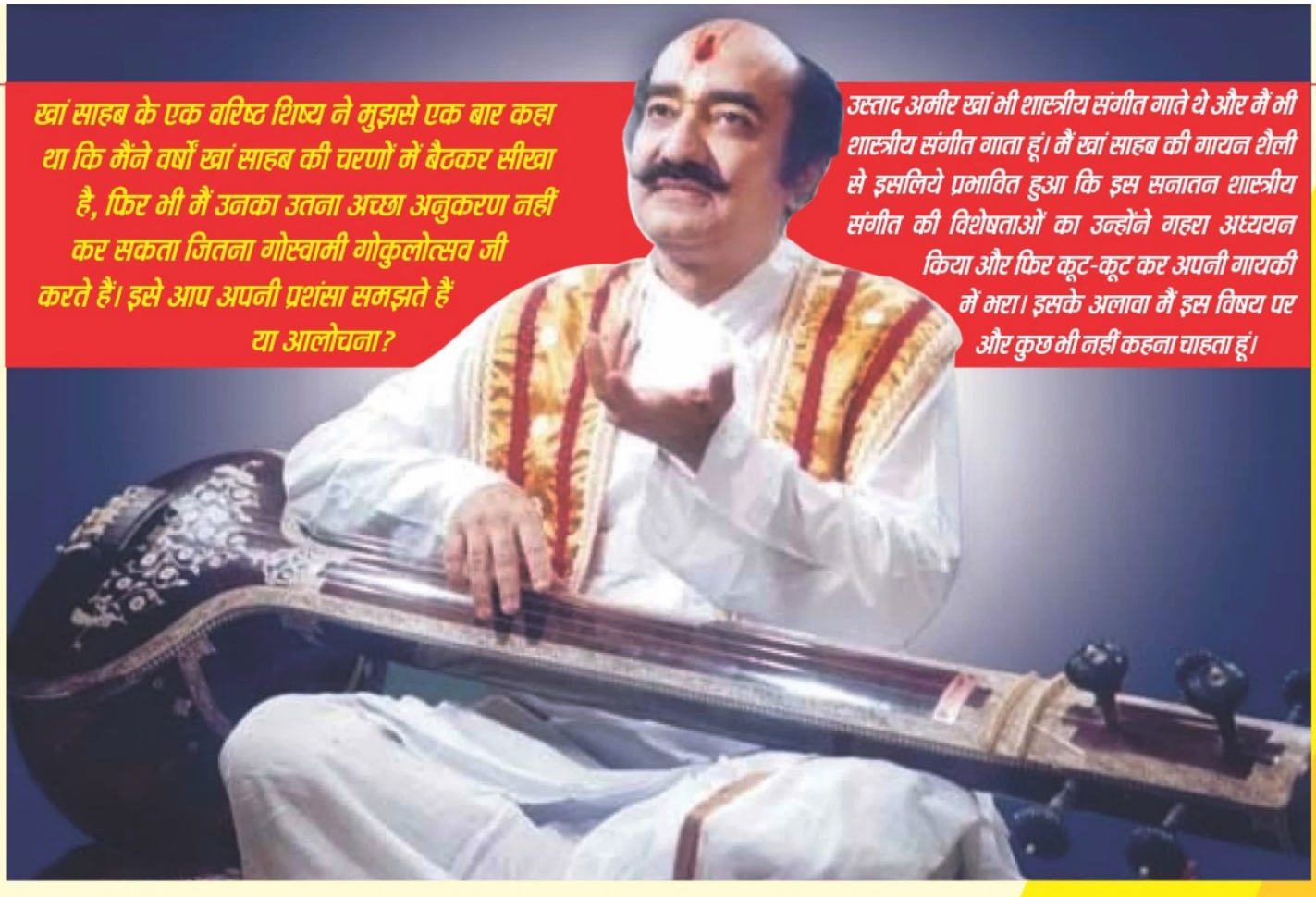

खां साहब के एक वरिष्ठ शिष्य ने मुझसे एक बार कहा था कि मैंने वर्षों खां साहब की चरणों में बैठकर सीखा है, फिर भी मैं उनका उतना अच्छा अनुकरण नहीं कर सकता जितना गोस्वामी गोकुलोत्सव जी करते हैं। इसे आप अपनी प्रशंसा समझते हैं या आलोचना?

उस्ताद अमीर खां भी शास्त्रीय संगीत गाते थे और मैं भी शास्त्रीय संगीत गाता हूं। मैं खां साहब की गायन शैली से इसलिये प्रभावित हुआ कि इस सनातन शास्त्रीय संगीत की विशेषताओं का उन्होंने गहरा अध्ययन किया और फिर कूट-कूट कर अपनी गायकी में भरा। इसके अलावा मैं इस विषय पर और कुछ भी नहीं कहना चाहता हूं।

है? क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि यह आपकी गायन अस्मिता पर प्रश्न चिन्ह है?

शुरू-शुरू में तो मुझसे ज्यादा दूसरे लोग परेशान होते थे। मेरे गायन के रेडियो प्रसारण के बाद इंडियन एक्सप्रेस में भी छपा और पाकिस्तान तक से चिट्ठियां आईं कि आपने रेकॉर्डिंग तो उस्ताद अमीर खां की बजाई और उद्घोषणा किसी अन्य के नाम का किया। एन. के. शर्मा के ऑफिस में खूब मीटिंग्स हुईं, काफी खतो-किताबत हुई और तब लोगों को ज्ञात हुआ कि गोस्वामी गोकुलोत्सव जी महाराज नामक एक गायक बिल्कुल अमीर खां साहब की शैली में गा रहे हैं। तब लोगों को आश्चर्य भी हुआ कि क्या ऐसा भी हो सकता है।

कोई बिल्कुल वैसे ही गा सकता है। इसके बाद आज से लगभग 22 वर्ष पहले लंदन में आयोजित एक कार्यक्रम में पाकिस्तान के गायक उस्ताद नजाकत अली खां और उस्ताद सलामत अली खां से जब मेरी मुलाकात हुई तो उन्होंने मुझे सुझाव देते हुए कहा कि 'उस्ताद की बराबरी नहीं करनी चाहिये। अत: आपसे मेरा अनुरोध है कि आप अपने गायन को थोड़ा बदलिए क्योंकि इससे लोगों को दोनों गायकों को अलग-अलग पहचानने में मुश्किल होती है।' उनका यह सुझाव मुझे भी पसंद आया और मैंने अपने गायन को थोड़ा-थोड़ा बदलना आरम्भ किया। उसे धीरे-धीरे एक नयी दिशा, नया अंदाज देने का प्रयास करने लगा। अत: मेरे आज के गायन को आप उस्ताद अमीर खां की प्रतिकृति नहीं कह सकते।

आपने अपनी गायन शैली भी बदल ली। आपने उस्ताद अमीर खां से सीखा भी नहीं। आप यह भी मानने को तैयार नहीं हैं कि आप उनकी नकल करते हैं। फिर, आपके नाम के साथ उस्ताद अमीर खां द्वारा स्थापित इंदौर घराने का नाम क्यों और कैसे जुड़ता है?

इसका उत्तर मैं नहीं, वे लोग देंगे जो मेरे नाम के साथ इंदौर घराने का नाम बलात् जोड़ते हैं। मैंने स्वयं को न तो कभी इंदौर घराने का शिष्य कहा है और न अनुयायी। मेरी तरफ से मेरा जो परिचय दिया जाता है उसमें कभी भी इंदौर घराने का नाम नहीं लिया जाता है। यह तो मेरे और उस्ताद अमीर खां के सम्बन्ध के बीच लोगों का अनावश्यक हस्तक्षेप है, और कुछ नहीं। मैं स्वयं को भारतीय सनातन शास्त्रीय संगीत की मूलधारा का अनुयायी, अनुगामी मानता हूं। घराना परम्परा में न तो मेरा कभी विश्वास था और न है।

संगीत का सबसे बड़ा गुण है लोगों को आनन्दित करना लेकिन श्रोताओं के एक बहुत बड़े वर्ग की शिकायत है कि शास्त्रीय संगीत नीरस हो गया है। आनन्द नाम की चीज ही नहीं रह गयी है उसमें। इसीलिये कुछ कलाकार इसे रोचक बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। इन तीनों स्थितियों को आप किस दृष्टि से देखते हैं?

सृजन तभी होता है जब कन्फ्यूजन पैदा होता है और कन्फ्यूजन तब पैदा होता है जब पर्याप्त ज्ञान का अभाव होता है। इस समय लगभग हर व्यक्ति समय, समझ और सम्पत्ति की समस्या से ग्रस्त है। आज लोगों के पास समझ विकसित करने के लिये समय नहीं है। प्राथमिकताएं बदल जाने से समझ की अपेक्षा सम्पत्ति अधिक महत्वूर्ण हो गयी है। समझने और समझाने का समय ही नहीं है किसी के पास। लेकिन मुझे लगता है कि यह समस्या अधिक दिनों तक नहीं रहेगी क्योंकि इस कला का इंसान से रूहानी रिश्ता होता है। आज पहले की अपेक्षा अधिक संख्या में लोग इसे सीख रहे हैं और मुझे विश्वास है कि अवश्य ही इनमें से कुछ ऐसे अच्छे लोग निकलेंगे जो इस कला को सही दिशा की ओर मोड़ने में समर्थ सिद्ध होंगे। मैं यह भी स्पष्ट कर दूं कि जिस्मानी ताल्लुकात वाला संगीत अधिक दिनों तक नहीं जीवित रहता। वह तो मच्छर और केंचुए के समान मौसम के साथ आता-जाता रहता है। व्ही, शांताराम, बसंत देसाई, नौशाद भाई जैसे लोगों का संगीत और रफी जी, लता जी, मन्ना दा एवं किशोर दा के गीत इसीलिये अमर हैं क्योंकि वे आत्मा की देन हैं।